संगीत शिक्षण के प्रचार–प्रसार में प्रौद्योगिकी की भूमिका

डॉ. परमजीत कौर
एसोसिएट प्रोफेसर (संगीत)
सनातन धर्म कॉलेज, अम्बाला केंट।

सारांश

वैज्ञानिक अध्ययन तथा नए–नए अनुसन्धानों के व्यवहारिक प्रयोग को ही प्रौद्योगिकी कहते हैं। इसका विकास तीन अवस्थाओं में हुआ – प्रथम, मशीनी ढंग से – इसके अन्तर्गत विकास की अवधि प्राचीन काल से 17वीं शताब्दी तक प्रबल रही। द्वितीय – इलैक्ट्रिक तथा इलैक्ट्रोमकेनिकल जैसे इलैक्ट्रिक तानपुरा, इलैक्ट्रिक गिटार इत्यादि। तृतीय – इलैक्ट्रोनिक या डिज़ीटल जैसे मोबाईल फोन, कम्प्यूटर इत्यादि माइक्रोचिप्स पर आधारित प्रौद्योगिकी है। यदि हम संगीत शिक्षण की बात करें, स्वतंत्रता प्राप्ति तक हमारे संगीत संस्थानों में सीना–व–सीना परम्परा का वर्चस्व था। कम्प्यूटर तथा इंटरनेट माध्यमों के प्रयोग से संगीत के पैडागोमीकल माध्यमों में परिवर्तन दृष्टिगोचर है। भारत में इंटरनेट की पहुंच 2021 तक 45 प्रतिशत पहुंच चुकी है। इंटरनेट की इतनी कम उपलब्धता के बावजूद भी महामारी काल में संगीत शिक्षण का ऑनलाइन अध्ययन–अध्यापन चल रहा है। आज प्रौद्योगिकी हमारी आवश्यकता ही नहीं, मज़बूरी है क्योंकि इसका अन्य कोई विकल्प नहीं है। आज की परिस्थिति को देखते हुए हम कह सकते हैं कि प्रौद्योगिकी भविष्य में संगीत शिक्षण का मुख्य केन्द्र रहेगी।

हमारी परम्परागत संगीत शिक्षण प्रणाली श्रुति (कान से प्रतिबद्ध) तथा स्मृति (स्मरण शक्ति से प्रतिबद्ध) ऐसे माध्यम थे जिनसे हज़ारों वर्षों तक गायन, वादन तथा नृत्य कलाओं का पीढ़ी–दर–पीढ़ी संचारण होता था। इसमें गुरू तथा शिष्य का सीधा सम्पर्क होता था। हाल ही में स्थापित परम्परा के बावजूद वैश्विक गांव (Global Village) के परिदृश्य में भारत भी इलैक्ट्रोनिक के टॉरपिडो (Tarpedo) में बह गया। यह प्रभाव जबकि सन् 2000 में सुगम संगीत से प्रारम्भ हुआ और अंत संगीत शिक्षण में प्रबल दिखाई देने लगा है। सन् 2020 में कोविड महामारी के चलते निजी तथा संस्थागत संगीत विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों तथा संगीत को समर्पित शिक्षण केन्द्रों में ऑनलाईन Virtual Education प्रारम्भ हुई। अतः यहां Comprehensive Learning Management System (LMS), Customised Mobile Apps and Subscription based Music Learning services such as practice tools प्रयोग होते हैं। यह परम्परागत अध्यापक तथा विद्यार्थी में होने वाले ज्ञान के आदान–प्रदान से परे है।

व्यापक शिक्षा प्रबन्धन प्रणाली [Comprehensive Learning Management System (LMS)] :- इसके अन्तर्गत cloud based tools जैसे –Google Classroom आदि का प्रयोग होता है। इस प्रणाली द्वारा वास्तव में शिक्षक वो सभी कार्य जो सामान्य कक्षा में करवाता है जैसे – विषय सामग्री की उपलब्धता, विद्यार्थी द्वारा किए गए कार्य को एकत्रित करना और उसकी प्रतिपुष्टि (feedback) तथा मूल्यांकन करना। इससे विद्यार्थी आपस में सम्पर्क साध सकते हैं तथा सामान्य रुचि के विषय पर चर्चा कर एक–दूसरे के ज्ञान से लाभान्वित हो सकते हैं।

संगीत शिक्षण में इलैक्ट्रोनिक ऐडस :– पश्चिमी देशों की भांति भारत में कम्प्यूटर आधारित नोटेशन तथा कम्प्यूटर आधारित शास्त्रीय वाद्यों का चलन नहीं है परन्तु तानपुरा तथा सुरपेटी का इलैक्ट्रोनिक स्वरूप धीरे–धीरे हिन्दुस्तानी तथा दक्षिणी भारतीय संगीत में ज़ोर पकड़ रहा है। तानपुरा Tone के लिए तथा Metronome Tempo के लिए प्रयुक्त होने लगे हैं। निःसन्देह इनके प्रयोग से बहुत से शास्त्रीय संगीतकार प्रसन्न नहीं है परन्तु इन साधनों द्वारा एक अकेला विद्यार्थी संगीत का प्रयास कर सकता है।

रिकार्डिंग :– संगीत स्वरलिपि, ध्वनिमुद्रण व ध्वनि संग्रह के क्रान्तिकारी शोध के कारण संगीत समृद्ध होने लगा है। मुद्रण के विकास के फलस्वरूप उस्तादों की ऐसी सैंकड़ों दुर्लभ बन्दिशें जो योग्य शागिर्द के न मिलने से उस्ताद के साथ ही चली जाया करती थी, आज स्वरलिपि के माध्यम से उपलब्ध हैं। इंटरनेट द्वारा हम किसी भी उस्ताद की

ISBN: 978-81-954645-0-0

रिकार्डिंग संग्रहित या लाईव सुन सकते हैं। रिकार्डिंग से शिक्षक तथा विद्यार्थी को अपने ज्ञान को और विकसित करना आसान हो गया है। ऑनलाईन विश्वकोष द्वारा संगीत के शास्त्रीय पक्ष के किसी भी आयाम की जानकारी ली जा सकती है।

शास्त्रीय संगीत पर आधारित एक ऐसा Audio-Visual Encyclopaedia होना चाहिए जिसमें गायन तथा वादन के हर पक्ष का पूर्ण ज्ञान गाकर तथा बजाकर सी.डी. या ऑनलाईन उपलब्ध हो। शिक्षक, विद्यार्थी, अन्वेषक इत्यादि सभी इसका पूरा लाभ उठा सकते हैं तथा वाद्य संगीत के विकास में अपना पूरा योगदान दे सकते हैं। इलैक्ट्रोनिक माध्यमों के प्रयोग से भारतीय संगीत के विकास में सकारात्मक प्रभाव पड़े हैं या नकारात्मक, यह विवाद का विषय है परन्तु एक बात तय है कि इलैक्ट्रोनिक तथा वैश्वीकरण के युग में संगीत का प्रचार–प्रसार अप्रत्याशित हो रहा है। यदि भारत की समुचित संगीत उद्योग की बात करें तो सन् 2018 में भारत ने 4430 लाख डॉलर कमाया जहां विश्व में इसका 15वां स्थान था। विश्व संगीत बाज़ार में भारत अभी पहले दस देशों की श्रेणी में भी नहीं है, इसके विकास की अपार सम्भावनाएं हैं।

यदि हम संगीत शिक्षा के ही क्षेत्र में देखें जो लोग एक ही ढर्रे पर चलना चाहते हैं, प्रौद्योगिकी उनकी कोई सहायता नहीं कर सकती। धारनी तथा तनुजा ने यह अनुभव किया कि संगीत बच्चों की शिक्षा का एक अहम् हिस्सा है और इस क्षेत्र में कार्य करने का मन बनाया। यद्यपि ये दोनों मित्र पहले बैंक कर्मी थे। इनका ध्येय Music School खोलकर धन अर्जित करना था। FURTADOS School of Music के नाम से पांच वर्ष पहले इन दोनों ने मुम्बई में एक स्कूल की स्थापना की और धीरे–धीरे इनके स्कूलों की संख्या 200 तक हो गई जो भारत के 14 बड़े शहरों में हैं। इनमें पढ़ने वाले बच्चों की संख्या 60,000 है। अभी FURTADOS Group का लक्ष्य 5 लाख बच्चों तक पहुंचना है। इन स्कूलों का पाठ्यक्रम तथा प्रबन्धन प्रौद्योगिकी की सहायता से ही किया जाता है जो विश्व के किसी भी संगीत स्कूल से कम नहीं है।

उपदेयता विकास की जननी है। यदि संगीत के क्षेत्र में नये–नये प्रयोग किए जाएंगे और श्रोतागण इन्हें पसन्द करेंगे, ऐसे संगीत की मांग बाज़ार में बढ़ेगी जिससे संगीत का स्वतः विकास होगा।

प्रौद्योगिकी के कुछ नकारात्मक प्रभाव भी हैं जैसे – इस पर अधिक निर्भर रहने में संगीत विद्यार्थियों की स्मृति द्वारा अभ्यास करने की रुचि कम हो गई है। गायन, वादन तथा नृत्य में विशेष प्रभाव तथा कलात्मक अभिव्यक्ति जो गुरु तथा शिष्य द्वारा सृजन होती है, प्रौद्योगिकी द्वारा नहीं हो पाती। इसी प्रकार प्रौद्योगिकी में संगीतकारों की निजी सुरक्षा पर भी सेंध लगाई है।

संगीत की सभी विद्याओं के वैश्वीकरण में प्रौद्योगिकी ने महती योगदान दिया है। संगीत शिक्षण जैसी गुरु–शिष्य परम्परा में भी प्रौद्योगिकी ने Virtual Guru का सम्मान हासिल कर लिया है। संगीत के प्रबन्धन क्षेत्र की उपयोगिता में इसके प्रयोग से हमारे देश में विश्व स्तर के नए–नए संगीत स्कूल खुल रहे हैं जिसमें सरकार का कोई निवेश नहीं है। सभी निजी प्रयासों से संभव हो रहा है। आने वाले समय में प्रौद्योगिकी के भरपूर प्रयोग से संगीत क्षेत्र में आशातीत विकास होगा और भारत आर्थिक रूप से उन्नति करेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि :

1. The Hindu, 19 January, 2012
2. The Pioneer, 22 June, 2021
3. कृतानंद पांडे, संगीत, मई 2014, पृष्ठ–43
4. indiatoday.in, April 20, 2021
5. The Times of India, 25 November, 2019

ISBN: 978-81-954645-0-0